संक्षिप्त

अन्तिम संस्कार विधि

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय, कश्मीर द्वारा उर्दू में प्रकाशित
तत्पश्चात
महात्मा रघुनाथ जी, पक्की डक्की जम्मू द्वारा
हिन्दी में अनुदित

पुस्तक काम

नाम :— सर्व नाम

धाम :— सर्व धाम

काम :— निष्काम

मूल्य :— अमूल्य

—:०:—

संक्षिप्त

अन्तिम संस्कार विधि

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय, कश्मीर द्वारा उर्दू में प्रकाशित

तत्पश्चात

महात्मा रघुनाथ जी द्वारा

हिन्दी में अनुदित

ॐ

'जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च
तस्मादपरिहार्यथे न त्वं शोचितमर्हसि ।।
—श्री मद्भगवद्गीता

अर्थ : जन्मे हुऐ मरते मरे निश्चय जन्म लेते कहीं ।
ऐसी अटल जो बात है उसकी चिंता उचित नहीं ।।

उदय होने वाले सूर्य का अस्त होना निष्चित है जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है । युग बदले, अनेकों परिवर्तन हुये और जगत में नित्य परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे, परन्तु यह नियम न बदला न बदलेगा कि जन्म के पश्चात मृत्यु और मृत्यु के पश्चात जन्म होता है । दिन और रात की तरह जन्म और मृत्यु का चक्कर चलता रहता है । कौन कैसा और क्यों जन्मता है और मरता है ? यह एक रहस्य है जिसका सम्बन्ध प्रभु को इच्छा और सकाम कर्म से है । मनुष्य के लिये इतना जानना आवश्यक है कि मृत्यु अटल है । उसके लिये शोक करना निष्फल है । एक हिन्दू के लिए जैसे जात कर्म इत्यादि संस्कार आवश्यक है वैसे ही अन्तिम संस्कार भी विधि अनुसार करना जरूरी है। ऐसे आवश्यक संस्कार के लिये योग्य परोहित का होना जरूरी है ।

चूंकि यह संस्कार किस का कब और कहां होगा ? इस तिथि से अक्सर हर एक मनुष्य अनभिज्ञ ही होता है इसी कारण से अन्तिम संस्कार के लिये यथायोग परोहित वगैरह का प्रबन्ध पहिले से ही करके रखना कठिन है तथा काश्मीर में ऐसे स्थान भी हैं जहां परोहित का प्रबन्ध हो ही नहीं सकता । इसी कठिनता को समझते हुए हमें यह संक्षिप्त अंतिम संस्कार विधि' छपवानी पड़ी ।।ओ३म्।।

संक्षिप्त अंतिम संस्कार विधि

जब यह बात समझ में आए कि अब मरण संमुख मनुष्य के प्राण कण्ठ पर आते हैं तो उस मनुष्य के मरण सम्मुख होने पर अंतदान करना ज़रूरी है। अंतदान के लिए यथाशक्ति चावल, वस्त्र, धन वगैरा इकट्ठा करके अन्तदान करने वाले मरण सम्मुख मनुष्य के दायें हाथ में तिल पानी देकर पढ़ें:–

तत्सत्ब्रह्माद्य तावन्तिथावद्य।

महीने पक्षवार का नाम लेकर पढ़ें:–

आत्मनो वाङ्गमनः कायू पार्जित पाप निवार्णधर्म् विष्णु प्रीत्यर्थं दधानि दधानि। उसके बाद उसी समय पृथ्वी पर गोबर तथा मिट्टी से लेपन करवाकर, उस स्थान पर दर्भ तथा घास बिछाकर, ऊपर से थोड़ा तिल फेंकें, और कर्त्ता (क्रिया कर्म करने वाला) उस मरण संमुख मनुष्य को इसी दर्भ के बिछौने पर, दाएं गुठने पर रखें और भगवतगीता का पाठ, तथा ब्रह्मविद्या पढ़ते हुए गंगाजल अथवा सालिग्राम से लिया हुआ चर्णामृत पिलाएं। प्राण निकलने पर मृत्तक को इसी दर्भ के बिछौने पर अच्छी तरह से लिटाकर सिर दक्षिण की ओर रखें, और ऊपर चादर डालकर ढांप दें। मस्तक (सिर) के निकट ही जलता हुआ दिया (चोंग) उत्तर की ओर मुंह करके रखें। आँगन में दो गज़ मुरब्बा के लगभग पृथ्वी को गोबर तथा मिट्टी से लेपन करके निम्नलिखित सामग्री एकत्र करें:–

सफेद लट्ठा = लगभग १० गज

सुई, धागा और रुई = १ छटांक

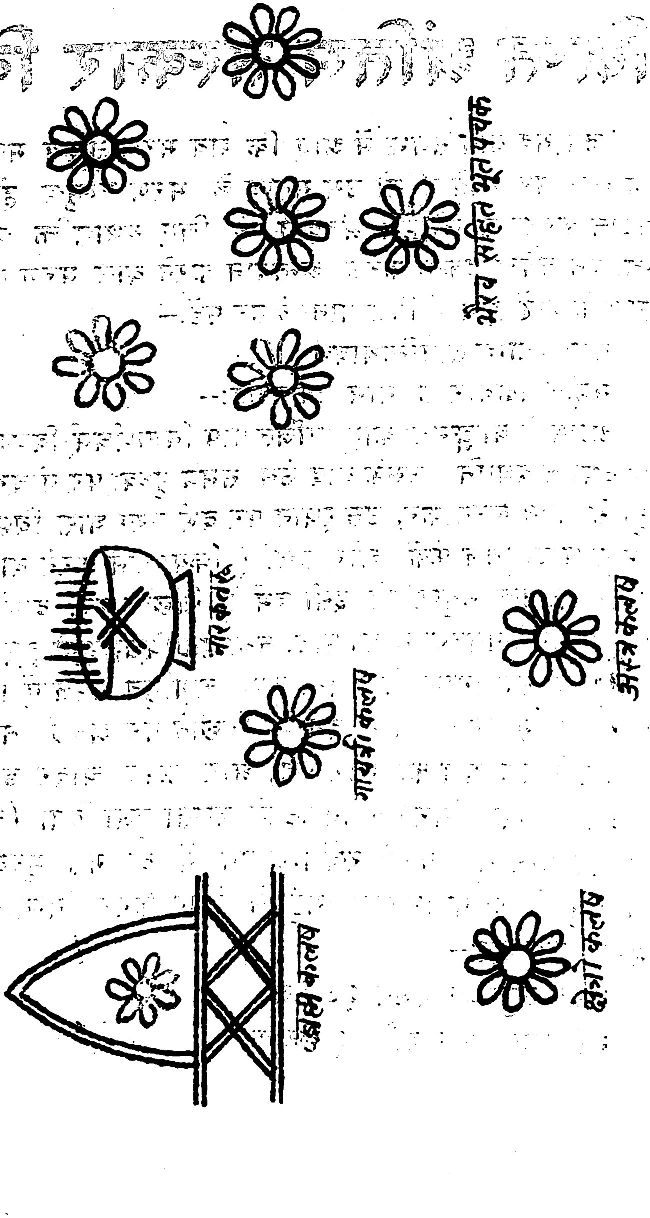
भैरव सहित भूतपंचक
गायत्री कलष
अस्त्र कलष
क्षेत्रो कलष

पुलहोर=१
शहद (मांछ)=१ तोला
केसर=१ रत्ती
घी=१ पाव
धूप, अखरोट=४

फूल, अर्ग, चावल सेर भर, भर्य, फल आधि=आध सेर, जव आटा आध सेर, जव दाना आध सेर, दिये (चोंग) ८, वारी १, टाकू ४, कत्तरू १, देग़ १, ल्येज १, फोतिर १।

तरखान और दर्ज़ी को बुलवाकर, तरखान से विमान, तखता आदि "स्रुव और स्रुच" अथवा लकड़ी के वोमुनहुर, और दर्ज़ी से कफ़न और कनटोप सिलवाकर कनटोप पर उलटा गायत्री मन्त्र केसर से लिखें:-

"ऊं तयाद् चो प्रनः योधि हिम दे स्यवदे र्गोभण्यंरेर्व तुत्सस्त स्व वर्भु भू ऊं"

अगर किसी स्त्री की मृत्यु हो तो गायत्री मन्त्र के बदले उल्टा यह मन्त्र लिखें:-

"ऊं यत द्वियं सभंहिया"

चौक़ा साफ करके जौ के एक पाव आटे के "चोचुवरी", 'स्नान देग़', 'बत्तल्यजी', 'नदर्यचुर्मा' या 'आलूचुर्मा' बनाकर तैयार रखें। आँगन में लेपन की हुई जगह पर अन्दर वाला चोंग जो मृतक के सिरहाने पर रखा गया है, निकालकर, धूप भी जलाकर रखें और जौ के आटे से ब्रह्मकलश भूत पंचक आदि नक़शे के अनुसार (पृष्ठ २ पर) बनवायें। जौ के आटे से शुमाल पूर्व कोण पर नक़्शा के मुताबिक ब्रह्मकलश बनाकर उसके बीच वाले अष्टदल कमल पर एक दीवा, विष्टर, पानी तथा अखरोट सहित रखें। कलश के नैर्ऋती कोण के पास एक टाकू उसमें भी विष्टर (दर्भ के दो

तिनकों का, न मिलने पर दर्भ के दो तिनकों से ही काम लें) इस टाकू को प्रणीत पात्र कहते हैं; गायत्री तथा अस्त्र कलश यानी नं० १ और नं० ३ पर चोंग और भैरव कलश नं० २ पर वारी रखें। इन दोनों चोंगों और वारी में विष्टर, एक एक अख़रोट और पानी डालकर रखें। भैरव सहित भूत पंचक कलश के अष्ट दलों पर भी चार अदद चोंग, अर्ग और पानी डालकर रखें और क़तुरू में आग जलायें। यह सारा प्रबन्ध होने के पश्चात् घास के आसन पर कलश के सामने बैठें और हाथ जोड़कर पढ़ें:—

(१) ओंकारो यस्य मूलं क्रम पद जठरं छंन्द्र विस्तीर्ण शाखा। ऋयग्पत्रं साम पुष्पं यजुर्उचित फलं स्यादथर्वं। प्रतिष्टा, यज्ञछाया सुशीतैर्दिजगण मधुपैर्गीयते यस्य नित्यं शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरति भयहरा पातु नो वेद वृक्षः।

(२) यह एक मंत्र तीन बार पढ़ें:—

आयातु वरदा देवि त्यक्षरा ब्रह्मवादिनी गायत्री छन्दसाम् मात्र ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।

(३) भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं भद्रं विधेम श्रणुयाम भद्रं नन्नो मित्रो वरुणो माम हंताम्-अधीति सिन्धो पृथ्वी उतः देव ॐ तत्विष्णों परमम पदं सदा पश्यन्ति सूर्याः दिवेव चक्षुराततम्-तत्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते, विष्णोर्यत परमं पदं— गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें:—

'गायत्री नमः ॐ भूर्भुवः स्व तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धियो यो नाः प्रचोदयात्'

भूत पंचकों के कलश को केवल अर्घ यानी चावल के दाने डालकर पढ़ें:— ॐ दृष्टे नमः उप दृष्टे नमः क्ष्यात्रे नमः उपक्ष्यात्रे नमः अनुक्ष्यात्रे नमः श्रण्वते नमः उपश्रण्वते नमः सते नमः असते नमः जाताये नमः जिनिष्मानाय नमः भूताये नमः भविष्ये नमः

चक्षुषे नमः श्रोत्राय नमः मनसे नमो वाचे नमः ब्रह्मणे नमः श्रान्ते नमः तपसे नमः प्रणीत पात्र में केसर का तिलक और तीन मंत्रों से तीन फूल डालकर पढ़ें:–

१. संवः स्रजामि हृदयं संसृष्टं मनवास्तु वाः

२. संसृष्टं तन्वः सन्तो वः संसृष्टा प्राणो अस्तु वः

३. संयावाः प्रिया तन्वः सं प्रिया हृदयानि वाः आत्मावोस्तु संप्रियः सं प्रियः तन्वो मम्

कलष के पूर्व की तरफ अर्घ सहित तिल फेंककर पढ़ें:–

'ए देवाः पूराः सिदोग्नि नेत्रा रक्षोहंसते नः पान्तु ते नु वन्तो तेभ्यः स्वाहा'

कलष के दक्षिण की तरफ अर्घ फेंककर पढ़ें:–

'ए देवाः दक्षिणात् सिद्धोयम नेत्रा रक्षाहंस्तेना पान्तुते नोवन्तु तेभ्यः स्वाहा'

उत्तर की तरफः–

'ए देवाः उत्तरात्सिद्धो मित्रा वरुणौ नेत्रा रक्षोहंस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा'

ऊपर को फेंककरः–

'ए देवा उपरिषदा सोमनेत्रा ओसवन्तो रक्षोहंस्ते नः पान्तु ते नोवन्तु तेभ्य स्वाहा'

नीचे को फेंककरः–

'सोमाय पर्षदि वसुवते रक्षोग्ने स्वाहा'

प्रणीत पात्र के दर्भ के विष्टर से पूजा की सामग्री को छींटे देकर पढ़ें:–

'आपोहिष्टा मयोभुवस्तान अर्चे ददातन मये रणाय चक्षसे यो वा शिवतमो रसस्तस्य बाजयते हनः उषतीरिव मातरः तस्माद-रंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा चनः'

अपने आपको तिलक लगाकर पढ़ें:—

'अधूर्योयं यज्ञो अस्तुदेवा औषदीभ्यः पशुभ्यो मे दनाय वशो-स्मये भूताय धुरोस्तु देवाः सपिनोस अथवत् देव यज्ञः।

दो दर्भ काण्ड अपने नीचे पृथ्वी पर डालकर पढ़ें:—

'इमं इन्द्रो अदीदृत ध्रुवं ध्रुवेण हविषा हवि तस्मै सोमो अधी ब्रुवत तस्मा अो ब्रह्मणसपतिः'

कलष को दर्भ के दो तिनके डालकर पढ़ें:—

'ध्रुवाधौ ध्रुवा पृथ्वी ध्रुवासा पर्वता इमे ध्रुवम् विश्वं इदं जगत ध्रुवो राजः विश्वामसि'

कलष के निचले हिस्से गणेश को तिलक लगा के पढ़ें:—

'निश सिद्ध गणपते गणेशो त्वामाहु विप्रतिमम कवीणाम न ऋते त्वत्क्रियते किञ्चनारे माहमर्कं मद्यवन् चित्रं अर्चः'

कलष को तिलक लगाकर पढ़ें:—

'अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवं ऋत्विजं होतारं रत्न वातमं शन्नो देवीरमीष्टये आपो भवन्तु पीतये शं यो अभिस्रवन्तु नः तत्विष्णो परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवेव चक्षुराततम् तत्वि-प्रासो विपन्यवो जाग्रवांसः समिन्धते विष्णोः यत्परमं पदं ऋतुपतये नारायणाय वासुदेवाय लक्ष्मि सहिताय नारायणाय नमः योरुद्रो अग्नो यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना द्विषे तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः भगवते भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय गणानांत्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनाम उपमश्रवस्तम ज्येष्ट राज्यं ब्रह्मणाम ब्रह्मणस्पतिः आनः श्रण्वनूतिभिः सीद साधनम भगवते विनायकाय वल्लभा सहिताय श्री महागणेशाय ॐ चित्रं देवानाभुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने आप्रा देवि पृथ्वी अन्तरिक्षं सूर्यः आत्मा जगतस्तस्थुशश्च भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय प्रभा सहिताय आदित्याय नमः जातवेद से सुणवाम सोममारातियतो निदहाति वेदा स नः

परिषद अति दुर्गानि विश्वा नाव्यो सिन्धोंम दुरितात्यग्नि भगवत्यै अमायै नमः कामायै नमः चार्वङ्गयै नमः टङ्कधारिण्यै नमः नारायणाय नमः पार्वत्यै नमः भक्षिण्यै नमः इष्टदेवी भगवत्यै नमः अभयङ्करी देव्यै नमः क्षोमङ्करी भगवत्यै नमः सर्व शत्रुघातिन्यै नमः इह राष्ट्राधिपतये नमः अमुक भैरवाय नमः हेरकादिभ्या नमः वटुकादिभ्यः नमः इन्द्राग्नि वर्म अहुलं युदुग्रं विश्वेदेवः नाति विदधन्ति शूराः तन्वा सर्वतु महद् अयुष्मन्तु जां उपगच्छेम जीव ।।

"दूप धीप"

सारी क्रिया बायां जञ्ज करके करें:–

हृदय को जल से छिड़कना:–तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानाम भवते मानः शंस्यो अरूरुषो धूर्त प्राणड़मर्त्तस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पतिः

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके पढ़ें:–

'वसो पवित्रमसि शतधारम् वसूनां पवित्रमसि सहस्रधारम् अयक्ष्मावा प्रज्या सं स्रज्ञामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति–

यजमान को तिलक लगाकर पढ़ें:–

'जीव त्वं शरदः शतम्'

अपने आपको तिलक लगाकर पढ़ें:–

'परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच भूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्र नाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्तये समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः'

दीप को तिलक, पुष्प चढ़ाकर पढ़ें:–

'स्वप्रकाशो महादीपे सर्वस्तस्त मिरा पहा प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः'

धूप को:–(तिलक तथा पुष्प चढ़ाकर पढ़ें:)

'वनस्पतिरसो देवो गन्धाड्यो गन्धवोत्तमः आह्वानं सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृहथतां'

सूर्य का ध्यान करके पात्र में फूल और तिलक डालकर पढ़ें:—

'नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः'

किसी पात्र में अर्घ सहित जल दायें हाथ के ऊपर से डालकर पढ़ें:—

'यत्रास्ति माता न पिता न बन्धु भ्रातापि नो यत्र सुहृद् जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि तत्रात्मदीपं शरणं प्रपध्ये आत्मने नारायणाय आधार शक्तये धूपदीप संकल्पात् सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः'

तत्सदब्र ह्याध्य तावत तिथावद्य महीना, पक्ष, तिथि, वार का नाम लेकर पढ़ें:—

'महागणपतये कुमाराये श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मकलष देवताभ्यः ब्रह्म विष्णु महेश्वर देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकायै वरुणाय यज्ञपुरुषाये अग्निश्वातादिभ्यः पितृगण देवताभ्यः दक्षिणे अस्त्राय वामे गायत्र्यै मध्ये भैरवाय दक्षिणे महादंष्ट्राय पश्चिमे करालायै उत्तरे मदोत्कटायै पूर्वे श्मशानाधिपतये मध्ये भैरवायै आग्रै वटुकादिभ्यः दूपधीप संकल्पात्सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः ततसत् ब्रह्माध्य तावत्तिथावद्य (माह पक्ष वार का नाम लेकर पितृ का गोत्र सहित नाम लेकर) अन्तक्रिया निमित्ते इषते धूपः इषते दीपः

चावल सहित दर्भ के दो तिनके सीदे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें:—

'गायत्र्यै नमः ॐभूर्भवः स्वः इत्यादि……'

उसके बाद आगे पढ़ें:—महागणपते कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्ष्म्यः विश्वकर्मणः द्वारदेवतानाम प्रजापते ब्रह्मकलष देवतानां ब्रह्मणः विष्णु महेश्वर देवतानां चातुर्वेदेश्वरस्य सानुचरस्य ऋतुपते

नारायणस्य दुर्गाया: त्र्यम्बकस्य वरुणस्य यज्ञपुरुषस्य अग्निश्वाता-दीनां पितृगण देवतानां (पितृ का नाम गोत्र सहित) पितो अस्त्रस्य गायत्र्या भैरवस्य महादंष्ट्रस्य करालस्य मदोत्कटस्ये शंमशानाधिपति भैरवस्य वटुकादीनां अर्चां अहंकरिष्ये ॐ कुरुष्व।

हाथ में पकड़े हुए चावलों को कंधों से फेंक कर दर्भ के दो तिनके निर्माल में डालें और दर्भ के दो दो तिनके आसन के रूप में कलषों को डालकर पढ़ें:—

'महागणपते	इदं	आसनं	नमः
कुमारस्य	"	"	"
श्रियः	"	"	"
सरस्वत्या	"	"	"
लक्ष्म्या	"	"	"
विश्वकर्मणा	"	"	"
द्वारदेवतानां	"	"	"
प्रजापते	"	"	"
ब्रह्मकलष देवतानाम	"	"	"
ब्रह्मणा	"	"	"
विष्णु महेश्वर देवतानाम	"	"	"
चातुर्वेदेश्वरस्य	"	"	"
सानुचरस्य	"	"	"
ऋतुपते नारायणस्य	"	"	"
दुर्गाया:	"	"	"
त्र्यम्बकस्य	"	"	"
वरुणस्य	"	"	"
यज्ञपुरुषस्य	"	"	"
अग्निश्वातादीनां	"	"	"
पितृगण देवतानां	"	"	" (यहां तक ब्रह्मकलष

पर आसन डालते जायें)

अब अस्त्रस्य (अस्त्र कलष पर आसन डालकर)

गायत्र्या (गायत्री कलष पर आसन डालकर)

भैरवस्य……

महादंष्ट्रस्य करालस्य मदोत्कटस्य श्मशानाधिपते भैरवस्य वटुकादीनां इदं आसनम नमः (भूत पंचकों को आसन डालकर)

चावल सहित दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़कर पढ़ें:—

'महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये, ब्रह्मकलष देवताभ्यः ब्रह्म विष्णु महेश्वर देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाये, दुर्गायै त्र्यम्बकायै वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निश्वातादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः अस्त्रायै, गायत्र्यै, भैरवायै, महादंष्ट्रायै, करालायै, मदोत्कटायै, श्मशानाधिपतये भैरवायै, वटुकादिभ्यः युश्मान् पूजयामि ॐ पूज्यः'

चावल के दाने फेंककर नये चावल के दाने दर्भ के साथ रख कर पढ़ें:—

'महागणपतिं कुमारं श्रियं सरस्वत्यं लक्ष्म्यं विश्वकर्माणं द्वारदेवता प्रजापतिं ब्रह्मकलष देवता चतुर्वेदेश्वरम सानुचरम ऋतुपतिं नारायणं दुर्गां त्र्यम्बकं वरुणं यज्ञपुरुषं अग्निश्वातादिन् पितृगणदेवताः अस्त्रं, गायत्र्यं भैरवं महादंष्ट्रम करालं मदोत्कटं श्मशानादिपतिम भैरवं वटुकादिन आवाहयिष्यामि ॐ आवाह्य'

टाकू में जल तिलक डालकर पढ़ें:—

'पाद्यार्थं उदकं नमः शन्नोदेवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तुनः भगवन्तः पाद्यं पाद्यं'

टाकू में रखे हुए विष्टर या दर्भ के दो तिनकों से कलष को छिड़क कर पढ़ें : 'महागणपतये…इत्यादि पढ़कर फिर से टाकू में

नया जल अर्घं के लिएं डालकर पढ़ें:—"शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः भगवन्तः अर्घ्यं अर्घ्यं"

(हर नाम के साथ इदं वो आर्घ्यं नमः पढ़ते जायें)

महागणपतये इदं वो अर्घ्यं नमः, कुमार ०, श्रियै ०, सरस्वत्यै ०, लक्ष्म्यै ० विश्वकर्मण ०, द्वारदेवता ०, प्रजापति ०, ब्रह्म कलष देवता ०, चतुर्वेदेश्वर ० सानुचर ० ऋतुपतये नारायण ० दुर्ग ० त्र्यम्बक ० वरुण ० यज्ञ पुरुष ० अग्निश्वाता व्याह ० पितृगण देवता ० अस्त्र ० गायत्रे ० भैरव ० महादंष्ट्र ० कराल ० मदोत्कट ० श्मशानादिपति भैरव ० वटुकादया ० इदं वोर्घ्यं नमः

तिलक लगाकर पढ़ें : 'महागणपतये इत्यादि' सारे नाम पढ़कर ब्रह्म कलष भैरवों को तिलक छिड़कते जायें और दुबारा इन्हीं नामों महागणपतये इत्यादि से अर्गपुष्प कलष वगैरह पर चढ़ाकर पढ़ें:—

'महागणपतये इत्यादि' नाम, ब्रह्मकलष देवतानाम, महादंष्ट्रादीनाम, श्मशानादिपतीनां वासो नमः यतियतासा देवतनाम अर्घ्यदाना विरचना विदिस्रवा परिपूर्णास्तु'

आचमनी के लिए टाकू में जल डालकर पढ़ें:—

'शन्नोदीवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तुनः'

कलषों को आचमन का जल छिड़क कर पढ़ें:—

'महागणपत्यादिभ्यः ब्रह्मकलष देवताभ्यः अस्त्रायै गायत्र्यै भैरवाय, महादंष्ट्रादिभ्यः श्मशानाधिपतिभ्यः आचमनीयं नमः'

टाकू में दक्षिणा के लिये नया जल व अर्घ डालकर पढ़ें:—

'शंन्नोदेवी इत्यादि' पढ़कर कलष भैरवां को दक्षिणा डालकर पढ़ें:—महागणपत्यादिभ्यः इत्यादि शमशानाधिपतिभ्यः 'दक्षिणाय तिलहिरण्यै रजत निष्करिणं दधानि'

फिर से कुछ दक्षिणा अर्घ पानी डालकर पढ़ें:—

'ऐ ता देवता सदक्षिणानीनः प्रीयंतां प्रीता संस्तु'

फूल डालकर पढ़ें:-ॐ तत्त्विष्णोंः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवेव चक्षुराततम तत्विप्रासो विपण्यवो, जाग्रवांसः समिन्धते विष्णोः यत्परमं पदं ॥ (कलष पूजा समाप्त)

वुज़ में लेपन करवाकर मृतक (शव) को उतारें और गर्म पानी से स्नान वगैरह करके कर्त्ता यानि जो क्रिया कर्म करता हो बाहिर के कलष अस्त्र कलष भैरव कलष गायत्री कलष के दो चोंगों और एक वारी का जल लाकर उसके साथ पानी मिलाएें और वुज़ में जाकर मृतक को पुरुषसुक्त की सोलह ऋचाओं से स्नान करें :

१. ओं सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ट दृशां गुलम ॥

२. पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यत्चभव्यम् ।
उता मृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥

३. एता वानस्य महिमा तोज्या यांश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

४. त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ्वध क्रामतसाशनान शनेअभि ॥

५. तस्माद्विराल ज्ञायत विराजो अधि पुरुषः ।
सजातो अत्यरिच्यतपश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥

६. यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम तन्वत ।
वएन्तो अस्था सीदाज्यं ग्रीष्म इद्मः शाद्धवि ॥

७. तंयज्ञंबर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जात्रम ग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्चये ॥

८. तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः संभृतं पृषदाज्यम ।
पशंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्चये ॥

९. तस्माद्यज्ञात्सर्व हुत ऋचः सामानिजज्ञिरे ।
छन्दांसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत् ॥

१०. तस्मादश्वा अजायन्त येकेचोभयादतः ।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ।।
११. यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकलपयन ।
मुखं किमस्य कौबाहू का उरूपादाउच्येते ।।
१२. ब्रह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्य कृतः ।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।
१३. चन्द्रमा मनसो जाताश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुर जायत ।।
१४. नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णोद्यौ समवर्तत ।
यद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकां अकल्पयन ।।
१५. सप्तास्यासन परिद्यर्यास्त्रः सप्तसमिद्यःकृता ।
देवायद्यज्ञं तन्वा ना अबध्नन्पुरुषंपशुम् ।।
१६. यज्ञेन यज्ञम यजन्तदेवास्ता निधर्माणि प्रथमान्यासन ।
तेहनाकं महिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवा ।।

इन सोलह ऋचाओं से शव को स्नान करके सुगन्धित द्रव्य मले । मृतक पुरुष हो या स्त्री स्नानपट अवश्य बांधें । पुरुष को पावों की तरफ से नया यज्ञो पवीत डालकर सिर की तरफ से पुराना यज्ञोपवीत निकालें । नव द्वारों (नाक के दो नथने, दो कान, दो आंखें, मुख और दो गुप्त स्थान को नवद्वार कहते हैं) को धूप के गोलकों से बन्द करके अनामिका अंगुली में पवित्र लगाकर सिन्दूर का तिलक लगायें । नार्यवन बांधकर मुंह में तांबे का पैसा डालें । लट्ठे तथा राम राम पट वगैरह से मृतक को ओढ़ाकर सर पर लट्ठे का वह कन्टोपा रक्खें जिस पर केसर से उल्टा गायत्री मंत्र लिखा है । मृतक के पैरों के तलों को थोड़ा सा शहद मलकर घास का पुल्होर जिस में रूई रखी हो पैरों में डालें । कर्त्ता बाहर निकल कर चोचि वोरू के टुकड़े और नदर्य चुर्मा भूत पंचकों के चोंगों में डालें । अर्थी यानी तख्ते को अच्छी

तरह से धोकर नीचे दर्भ और तिल छिड़क कर डालें। शव को फिर उस पर रखकर जौ के आटे के तीन पिंड बनाकर एक पिंड सर की तरफ रखकर पढ़ें–

'तत्सत्ब्रह्माद्य तावत्तिथावदे महीना, तिथि वार तथा गोत्र सहित मृतक का नाम लेकर पढ़ें–

पिता० अन्त्य क्रिया निमित्ते इष ते स्वधा पिण्ड पिता० तृप्यतो।

अब सारा सामग्री कलष पात्र अस्त्र कलष पात्र गायत्री कलष पात्र भैरव कलष पात्र चोंग वगैरह सब सामग्री इक्ट्ठी करके फोतरी (टोकरी) में उठाकर श्मशान पर साथ ले जायें। केवल भूत पंचक कलष आंगन में ही रख छोड़ें। बाद में लेपन करने पर वह भूत पंचक के कलष वगैरह निर्माल में डालकर दरिया में फेंक दें। अर्थी को उठाकर आरती करके महिम्नः पार इत्यादि पढ़ें। साथ चलने वाले श्मशान तक इक्ट्ठे मिलकर पढ़े–

'क्षन्तव्यो मेपराधः शिव, शिव, शिव

श्री महादेव शम्भो" श्मशान से आधे फासले पर अर्थी को नीचे रखकर शव का सर दक्षिण की तरफ रख कर और सूर्य दर्शन करवा कर सिर की तरफ जो का दूसरा पिण्ड रखकर पढ़ें– "तत्सत्ब्रह्माद्य तावत्तिथावद्य महीना, तिथि, वार गोत्र सहित मृतक का नाम लेकर पिता० इत्यादि अन्त्य क्रिया निमित्ते इषते मकरध्वज पिण्डः पिता तृप्यतो।"

फिर अर्थी उठाकर श्मशान पहुंचें तो अर्थी तो नीचे रखकर जौ का तीसरा पिण्ड रखते हुए पढ़ें–तत्सत्ब्रह्माद्य तावत्तिथावद्य महीना, पक्ष, तिथि, वार का नाम लेकर पढ़ें–"पिता (गोत्र) अन्त्य क्रिया निमित्ते ईष ते यमध्ता पिण्डः पिता तृप्यतु॥

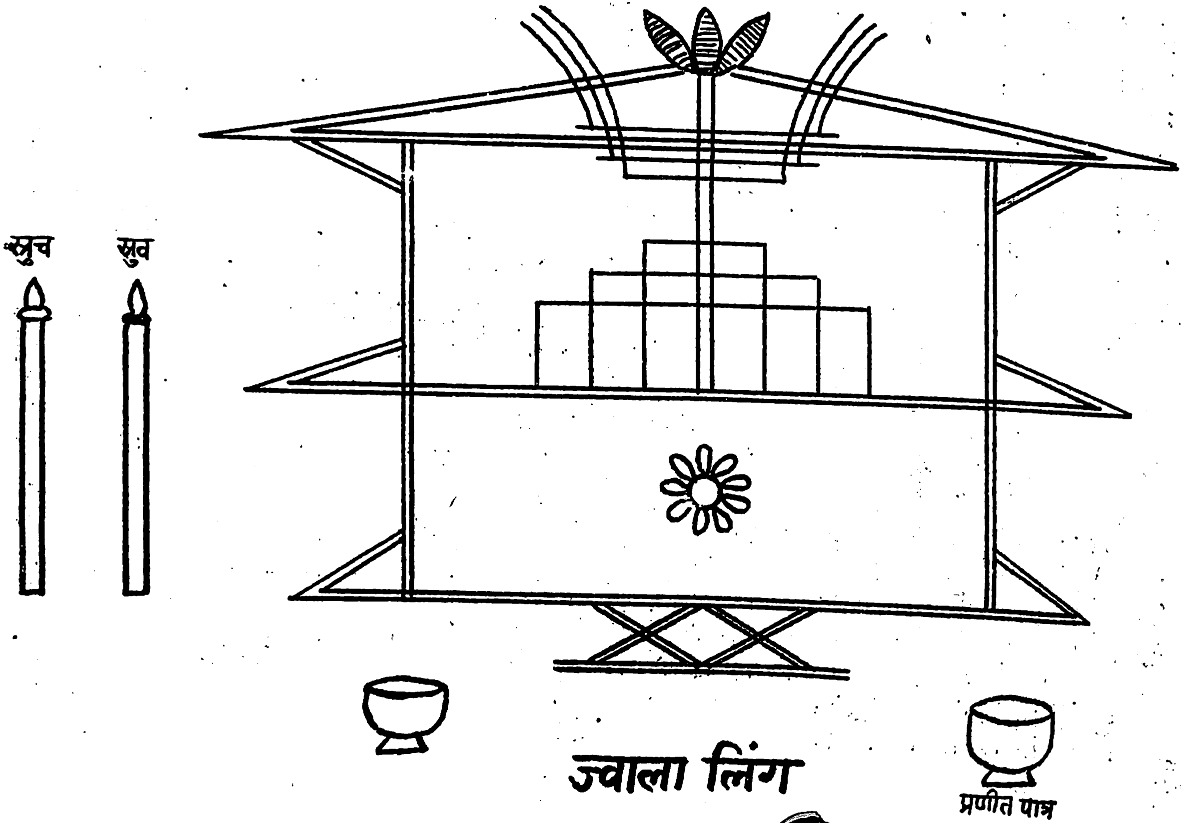

ज्वाला लिंग

तीनों जौ के पिण्ड जो अर्थी पर रखे थे दरिया में फेंकें। श्मशान में जौ के आटे से ज्वाललिंग (पृष्ठ १५ पर दिये नक्शे के अनुसार) बनाकर उसपर आग का कतरू रखें। अपने बायें तरफ स्रुव जिसका एक ही मुख हो स्रुच जिसके दो मुख हों रखें। अपने दायें तरफ नैर्ऋती कोण पर पात्र रखें जिसे प्रणीत पात्र कहते हैं। अग्नि के सामने टोकू में घी रखें उसमें भी विष्टर डालें प्रणीत पात्र में विष्टर या दर्भ के दो तिनके डालकर बायें हाथ में उपयाम (दर्भ की सात तिलियों से बनाया हुआ) या दर्भ के सात तिनके रख कर प्रणीत पात्र में तीन फूल डालकर पढ़ें—

'संवः सृज्यामि हृदयं संस्रष्टं मनो अस्तुवाः
संस्रष्टा तन्वः सन्तुवः संस्रष्टः प्राणो अस्तुवः
सं यावः प्रिया तन्वः सं प्रियः हृदयाणि वः
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियः तन्वो मम

प्राणयाम करके अग्नि को प्रणीत पात्र के जल से नौ बार छिड़कें, पढ़ें—

(१) ऋतं त्वास्त्येन परिसमुह्यामि
(२) सत्यं त्वरतेन परिसमुह्यामि
(३) ऋतस्त्येम्यः नत्व परिसमुह्यामि
(४) ऋत्वं त्वासतेन पर्युक्ष्यामि
(५) सप्यं त्वरत्वेन पर्युक्ष्यामि
(६) ऋतस्त्येभ्यः नत्वा परयुक्ष्यामि
(७) ऋतं तोस्त्येन परिषञ्चामि
(८) सत्यं त्वारितेन परिषश्चामि
(९) भया नत्वा परिषञ्चामि

ज्वाला लिंग के ऊपर रखे हुए 'नार कतरू' के पूर्व को तरफ पांच दर्भ के तिनके दक्षिण की तरफ तीन, उत्तर की तरफ तीन, पश्चिम की तरफ पांच तिनके फेंक कर अपने बायें तरफ एक टाकू

में एक एक चोचिवोरू उसके ऊपर थोड़ा सा जौ रखें फिर स्रुच (दो मुखवाले) के ऊपर विष्टर रखें और हाथ में उठाकर पढ़ें—

"सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः
प्रसविष्णोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आददे"

यह पढ़ कर स्रुच दर्भ के विष्टर सहित उल्टा चोचिवोरू पर डालकर पढ़ें—"यमाय अग्निश्वातादिभ्यः जुष्टं निरूपामि" फिर से उस स्रुच को उठा कर और विष्टर धोकर पढ़े—

"सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितो प्रसविष्णोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आददे यमाय अग्निश्वातादिभ्यः जुष्टं परोक्ष्यामि" पढ़ते हुए स्रुच से विष्टर इसी चोचिवोरू पर डाल कर रखें स्रुच अपने स्थान पर रखें और चोचिवोरू के अन्दर एक दर्भ का तिनका ठूंस दें एक अखरोट हाथ में लें और मृतक का नाम गोत्र के समेत लेकर अखरोट घी के पात्र में डालें और पढ़ें—

"पितो इत्यादि अन्त्य क्रिया निमित्तं यमाय अग्निश्वातादिभ्यः इदं आज्यं अर्पयामि नमः,' स्रुव (वोमनहुर) से अग्नि में अलग अलग एक मंत्र से एक एक आहुति डालें, पढ़ें—

(१) आयुष्यो प्राणं सन्तनु स्वाहा
(२) व्यानात् अपाणं " "
(३) अपानात चक्षुः " "
(४) चक्षषाः श्रोत्रं " "
(५) श्रोत्रात वाच्यं " "
(६) वाच्यः आत्मानं " "
(७) आत्मना पृथिव्यं " "
(८) प्रथिव्या अन्तरिक्षं " "
(९) अन्तरिक्षात देवं " "
(१०) देवा स्वाहा " "
(११) त्वं सोमासि सत्पति त्वं राजुत्वा वस्त्रहा त्वं भद्रो असिक्रतो स्वाहा ॥

चितावास कलष

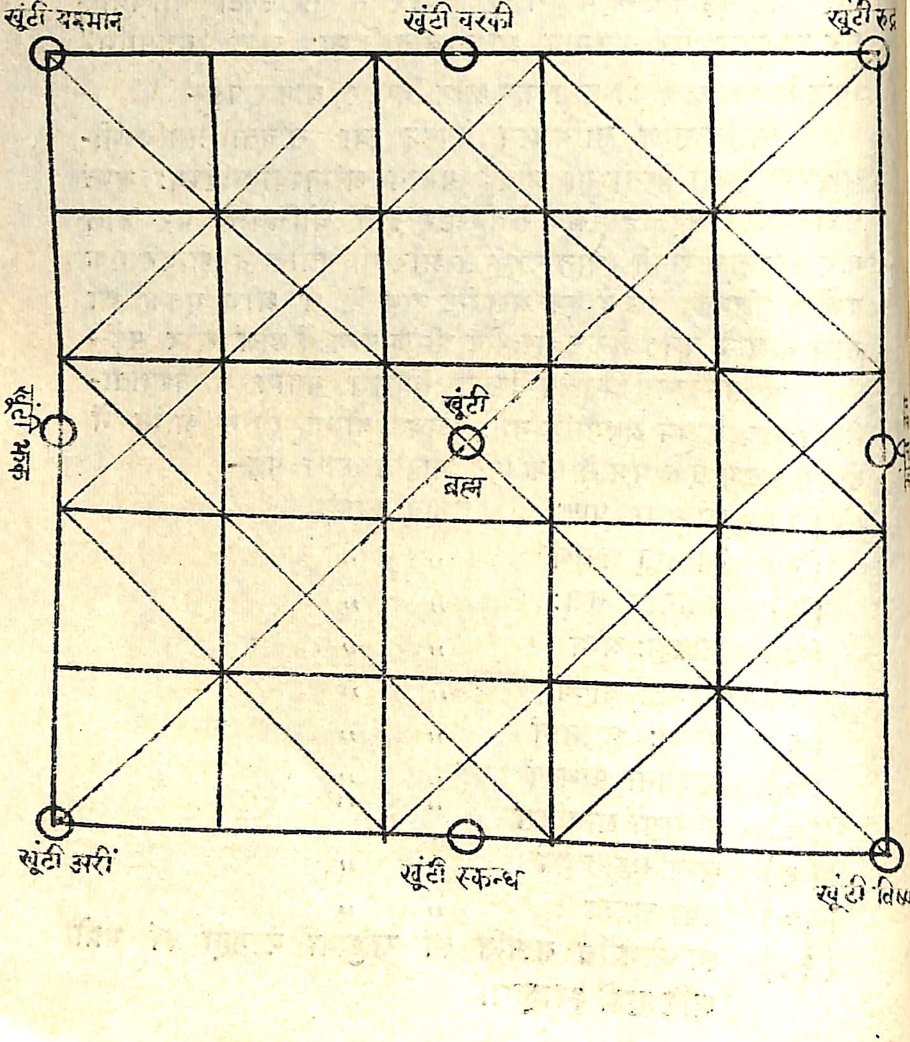

स्रुच के ऊपर स्रुव से थोड़ा सा घी डालकर स्रुच से ही आहुति अग्न में डालकर पढ़ें–"यमाय स्वाहा, दूसरी आहुति २. अग्निश्वातादिभ्य: स्वाहा, तीसरी आहुति ३. प्रेतो दूर्भू: रथो अस्मान अ्श्नोतु विश्वताइन: रक्षासि दाशोशा स्वाह ।।

(अग्नि पूजा समाप्त)

जहां शव का दाह संस्कार करना हो वहां लेपन करवाकर तिलक फूल अर्ध लकड़ी को छोटी नौ खूंटियां, आटा बतल्यजी इस लेपन के पास लाकर रखें। अब चिता वास पूजा करनी है। इसके लिए आटे का मायाजाल (पृष्ठ १८ पर बने नक्शे के अनुसार) बनायें।

टाकू में जल तथा विष्टर (दर्भ के दो तिनके) डालकर और तीन बार फूल डालकर पढ़ें–

'संव: सृज्यामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तुव: सं स्रष्टा तन्व: सन्तुव: संसृष्ट: प्राणो अस्तुव: संयाव: प्रिय: तन्व: सं प्रिय: तन्व: संप्रिया हृदयानि व आत्मावो अस्तु संप्रिया सं प्रियान्तु मम।

दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़ कर तीन बार गायत्री मंत्र पढ़ें उसके बाद––

तत्गत्ब्राह्माद्य तावत्तिथावद्य महीने पक्षवार का नाम लेकर पढ़ें–

❀"ईषानि गगनयुतस्य ईशानस्य अग्नियो सुकेतु युत्तस्य रूद्रस्य नैऋते सजल्युतस्य विष्णो वायव्य वायुयुतस्य ईश्वरस्य मध्ये पृथ्वी युते ब्राह्मणा: इन्द्रस्य यमस्य आयां पते सोमस्य पृथ्वीयुतस्य चवर्या विद्रया पूतनाया: पापराक्षा: स्कंदस्य अरिम्णा पिल पंछस्य चितावास देवतानाम (मृतक का गोत्र सहित नाम लेकर) अन्तय कर्म निमित्तं चितावास पूजनं अर्चां अर्चां अहं करिष्य ओं कुरुष्व"

दर्भ के दो-दो तिनके बार-बार चितावास के ईशाण कोण से

लगातार डालते हुए ऊपर के सभी नाम ❀ पढ़िये और दर्भ के दो-दो तिनके डालकर पढ़ें—

● 'ईशानी गगनयुतस्य ईशानस्य इदं आसनं नमः......इत्यादि चितावास देवतानाम इदंमासनं नमः' दर्भ के दो तिनके चावल सहित हाथ में लेकर पढ़ें—'चितावास देवतानाम युष्मान पूजयामि उों पूज्यः' टाकू में फिर से अर्घ जल डालकर पढ़ें—'पाद्यार्थ उदकं नमः भगवन्तः पाद्यं पाद्यं' विष्टर से चितावास को छिड़कते हुए पढ़ें—'चितावास देवताभ्यः पाद्यं नमः' टाकू में फिर से नया जल डाल कर पढ़ें—'भगवन्तः अर्घ्यं अर्घ्यं इसी जल से विष्टर के साथ छिड़कते हुए पढ़ें—'चितावास देवताभ्यः इदं वोर्घ्यं नमः' चितावास के सभी तरफों की खूँटियों के पास इशाणी कोण से शुमाल मशरिक को तिलक लगाकर पढ़ें—

"ईशानी गगन युताय ईशानाय, सुकेतु युताय रुद्राय सजल युताय विष्णवे वायु युताय ईश्वराय पृथ्वीयुताय ब्रह्मणे इन्द्राय यमाय अपांपतये सोमाय चर्क्यै विदार्य पूतनायै पापरक्षसे स्कंदाय अर्यम्णे झमकाय पिल पंछाय चितावास देवताभ्यः समालभनं गधो नमः" फिर इन्हीं नामों से अर्घ पुष्प ईशानी कोण शुमाल मशरिक की खूँटियों से आरम्भ करके डालते जाएं और अन्त में पढ़ें—"चितावास देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः"

बतल्यजी से एक बतटोकू उठाकर बाकी बत्त ईशान कोण से आरम्भ करके वही चौबीस ● (२४) नाम इशानी गगन युतस्य इत्यादि—

चितावास देवताभ्यः

उों नमो नैवेद्यामि नमः

बतटोकू चितावास से दूर कहीं सम्भाल कर रख छोड़ें।

(चितावास पूजा समाप्त)

इस चितावास के ऊपर चिता तैयार करके मृतक को उस पर चढ़ायें सर दक्षिण ओर मुँह पूर्व की तरफ करें। लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों के सरों पर रूई लगाकर तैयार रखें। इनको उलमुख कहते हैं। फिर कर्ता एक उलमुख को, नार कतरू से जला कर चिता को मृतक के सर से जलाना आरम्भ करें। फिर दूसरे साथी उन्हीं उलमुखों से चिता को सर की तरफ से जलाकर घी का पात्र, वोमन्हुरू और घी में डाला हुआ अखरोट भी चिता में डालकर पढ़ें- अस्मत् त्वम् अभि जातोस्य, त्वदहं जायते पुनः असौ (मृतक का नाम लेकर) स्वर्गाय लोकाय स्वाहा। कुल्हाड़ी मृतक के सर की तरफ से ज़मीन में कुछ दबाकर रखें फिर कर्ता भैरव कलष की वारी को उठाकर उसमें नया जल डालकर चिता की परिक्रमा करके उस कुल्हाड़ी पर वह वारी तोड़ डाले फिर उपस्थान करे। मृतक का कुछ दाह संस्कार होकर कर्ता दर्भ के दो तिनके व अर्घ हाथ में लेकर पढ़ें- "तत्सत्ब्रह्माद्य तावत्तिथावद्य (महीना, पक्ष, वार, तिथि और मृतक का नाम लेकर पढ़कर) पितो अन्त्य क्रिया निमित्तम चितावास पूजनं क्षत्रेश्वर पूजनं अच्छिद्रं संपूर्णं अस्तु।

तिलोदकः—मृतक के साथ सब आये हुए दरिया पर मुख-शोधन करके बायां यज्ञोपवीत रखकर थोड़ा थोड़ा तिल हाथ में लें और तर्पण करते हुए पढ़ें—'तत्सत्ब्रह्माद्य तावत्तिथाद्य (महीने पक्ष, तिथि, वार, मृतक का नाम लेकर) पढ़ें—अन्त्य क्रिया निमित्तं एतत्ते उदक तर्पणं'

मृतक का अच्छी तरह दाह संस्कार होने के बाद सभी हाथ में लकड़ी के दो-दो टुकड़े उठाकर और दक्षिण की तरफ करके पढ़ें—

'वन्दे रुद्रं उमापतिं सुरगुरं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नग भूषणं शशिधरं वन्दे पशूणां पतिं

वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्द प्रियं
वन्दे शैल सुता मनोहर तरं वन्दे शिवं शङ्करं

चिता की एक प्रदक्षिण देकर हाथ में रखे हुए लकड़ी के टुकड़े चिता में डालें और प्रणाम करके स्नान करें और किनारे पर इकट्ठे मिलकर घास जलाकर उसके इर्द गिर्द तीन बार ओं नमः शिवाय पढ़ते पढ़ते घूमें। कर्त्ता घर पहुंच कर वुज़ के चोंग को बुझा कर ऊपर चढ़ें। ओं शान्ति शान्ति शान्ति ।।

—:o:—

Translated into Hindi by:-

MAHATMA RAGHUNATH JI

"WALI NIVAS"

202- Paki Daki

JAMMU (TAWI)

मुद्रक :
नया संसार प्रेस
गलशहीद रोड,
मुरादाबाद-२६ (यू० पी०)